नवदुनिया

भोपाल सिटीलाइव

www.naidunia.com

22 | अरे परिणीति! तेरा परमा कहां हैं...?

भोपाल, रविवार 17 फरवरी 2013

» दीवानों के बीच देवगन

एमपी नगर में शनिवार को भी 'सत्याग्रह' की शूटिंग देखने लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा। लोग अजय देवगन और करीना कपूर को देखने घंटों तक सड़क पर ही खड़े रहे। फोटो : नवदुनिया

रैंप पर बिखरा जलवा

समन्वय भवन में स्पेक्ट्रम 2013 का आयोजन

रैंप पर कैटवॉक करतीं मॉडल, उनके खास परिधानों ने मन मोहा

शाहबर अली

अनुष्का तिवारी

» नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी का शो

भोपाल (नप्र)। रिमिक्स सॉन्ग्स के साथ मॉडल्स के थिरकते कदम, रैंप पर बिखरता जलवा और मंत्रमुग्ध से देखते दर्शक। मॉडलिंग का शनिवार को यही जलवा दिखाई दिया समन्वय भवन में। मौका था नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी के फैशन स्पेक्ट्रम 2013 का।

इस फैशन शो के दौरान स्टूडेंट्स ने अपनी क्रिएटीविटी से दर्शकों का मन जीत लिया। रैंप पर डोम स्टाइल में राउंडेड फ्रॉक और गाउन को काफी पसंद किया गया। इसमें करीब 130 स्टूडेंट्स द्वारा तैयार किए गए डिजाइंस का प्रजेन्टेशन किया गया।

जमकर बजीं तालियां

स्टूडेंट्स ने 6 अलग-अलग राउंड्स में अपने एक से बढ़कर एक अलग-अलग पैटर्न से बने डिजाइंस प्रस्तुत किए। स्टूडेंट्स द्वारा डिजाइन किए गए कुछ क्लॉथ डिजाइनों को भी रैम्प पर उतारा गया। मॉडल्स द्वारा कुछ क्लॉथ का प्रजेन्टेशन कुछ खास अंदाज में किया गया। दर्शकों ने स्टूडेंट्स की प्रस्तुतियों की जमकर सराहना की। मॉडल्स ने रिमिक्स रैम्प बीट्स पर डांस स्टेप भी करके दिखाए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर आमंत्रित एडीशनल चीफ सेक्रेटरी अजिता वाजपेयी पांडे ने स्टूडेंट्स की प्रस्तुति की सराहना की। कार्यक्रम में स्टूडेंट्स ने ग्रुप डांस की प्रस्तुति दी। स्टूडेंट्स द्वारा बॉल हल्के-हल्के फिल्म सॉन्ग की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम के दौरान स्पेक्ट्रम 2013 पुस्तक का विमोचन किया गया। यहां मुंबई से आए अभिनेता शाहबर अली, अभिनेत्री अनुष्का तिवारी और कलाकार अहमद खान मौजूद थे।

समन्वय भवन में शनिवार को ग्रुप डांस करती मॉडल्स। फोटो : मो. इरफान

शहर में हुआ इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल, कई फिल्मों का हुआ सिलेक्शन

'गवाह' में मुंबई बम कांड

» नोयडा के मिनी बॉक्स ऑफिस का आयोजन

भोपाल (नप्र)। 'आतंकवादी चाहे बम ब्लास्ट करें या फिर एरोप्लेन टकराकर लोगों की जिंदगियां छीन लें। उसका असर सालों तक लोगों के दिलो-दिमाग में रहता है। इन त्रासदियों के गवाह रहे लोगों की जिंदगी बहुत मुश्किल हो जाती है।'

यह थीम थी शॉर्ट फिल्म 'गवाह' की। इसका प्रदर्शन शनिवार को होटल आर्कमेनॉर में आयोजित भोपाल इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में किया गया। नोयडा की मिनी बॉक्स ऑफिस संस्था द्वारा आयोजित इस फेस्टिवल में देश-विदेश की शॉर्ट फिल्म और डाक्यूमेंट्रीज दिखाई गईं। मुंबई बम कांड पर आधारित फिल्म गवाह में दिखाया गया कि जब कोई घटना होती है, उसके कुछ दिन तक ही सरकार और मीडिया सक्रिय रहती है और बाद में सब इसे भूल जाते हैं, लेकिन जिन लोगों के साथ या जिनके सामने ये घटनाएं हुई हैं उनके लिए एक-एक पल भारी पड़ता है। उनकी पीड़ा को इस फिल्म के जरिए सामने लाया गया। गौरी चड्ढा द्वारा निर्देशित इस फिल्म का निर्माण चेसिंग फ्रेम्स प्रोडक्शन्स के बैनर तले किया गया था। फिल्म की अवधि 21 मिनट 52 सेकंड की है। सिनेमेटोग्राफी दुलीप रेग्मी और सुदीप सेनगुप्ता की थी।

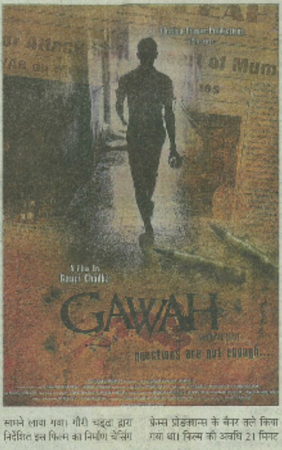

इन मूवीज का रहा जलवा

दिन भर चले इस फेस्टिवल में आईआईटी मुंबई के सोहम चक्रवर्ती द्वारा निर्देशित 'पेंडोरास बॉक्स', इंदौर के चौइथराम इंटरनेशनल स्कूल के रचित यादव द्वारा निर्देशित खोया बचपन (21मिनट), भोपाल के फ्रेमबॉक्स एनीमेशन एंड विजुअल इफेक्ट्स द्वारा पुनीत जैन के निर्देशन में तैयार 'लोनेट क्लब'(5मिनट), एक्सट्रा कलेक्टिव भोपाल की चंदा के जूते (22मिनट), मुंबई के मिक्की नरुला और सुनील गुप्ता द्वारा निर्देशित कुंवर साहिब की महिमा सहित पुणे, नोयडा, गुड़गांव, हैदराबाद, चेन्नई और स्पेन व ईरान के फिल्मकारों की डाक्यूमेंट्रीज भी दिखाई गईं।

देश भर के फिल्मकारों ने इसमें शिरकत की। फेस्टिवल डायरेक्टर रामबाबू सिंह के अनुसार इसके पहले यह आयोजन मुंबई, दिल्ली, कोलकाता, नोयडा व बैंगलुरू में हो चुका है। फेस्टिवल के समापन के मौके पर उत्कृष्ट फिल्मों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माखनलाल चतुर्वेदी विश्वविद्यालय के कुलपति बीके कुठियाला थे। विशेष अतिथि फिल्म प्रोड्यूसर और ज्ञान गंगा ग्रुप के डायरेक्टर मिनीराज मोदी थे।

तब काम आती है इंसानियत

अमेरिका की आतंकवादी घटना हो या मुंबई का बम कांड, जब त्रासदी से आदमी घिर जाता है तब इनसे उबरने में इंसानियत ही आगे आती है। इस बात को मेरे दिल ने छू लिया और मैंने 'गवाह' बनाने का निर्णय लिया। यह कहना है फिल्म की डायरेक्टर गौरी चड्ढा (मुंबई) का। फेस्टिवल में शामिल होने आईं गौरी ने बताया कि यह उनकी चौथी फिल्म है। साथ ही वे हॉलीवुड और बॉलीवुड के विभिन्न प्रोजेक्ट्स में काम कर चुकी हैं। इनमें मिशन इंपासिबल- घोस्ट प्रोटोकोल (2011), गांधी ऑफ द मंथ (2012) आदि शामिल हैं। आगे वे ह्यूमन ट्रैफिकिंग विषय पर फीचर फिल्म बनाने पर विचार कर रही हैं। इसमें हॉलीवुड के कलाकार और फिल्मकार भी शामिल होंगे।

वैश्वीकरण पर संवाद

भोपाल (नप्र)। धर्मपाल शोधपीठ और संधान संस्था द्वारा 17 फरवरी को दोपहर 4:30 बजे से वैश्वीकरण विषय पर संवाद का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इसमें प्रख्यात विचारक केएन गोविंदाचार्य, फिल्म निर्माता-निर्देशक डॉ चंद्रप्रकाश द्विवेदी, संघ के प्रचारक रामदत्त चक्रधर और अर्थशास्त्री प्रो कुसुमलता केड़िया अपने विचार रखेंगी। कार्यक्रम एनआईटीटीटीआर सभागार में होगा।

पोषण की सुरक्षा और कुपोषण विषय पर फैलोशिप की घोषणा

भोपाल (नप्र)। विकास संवाद संस्था ने मीडिया लेखन फैलोशिप की घोषणा की है। इस साल प्रदेश के चार पत्रकारों को सामाजिक मुद्दों पर लेखन के लिए फैलोशिप दी जाएगी। आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 5 मार्च है। इस वर्ष की फैलोशिप पोषण की सुरक्षा और कुपोषण विषय पर दी जाएगी। आवेदक को अपना प्रस्ताव और कार्य योजना को मप्र के किसी एक अंचल में रहने वाले किसी एक आदिवासी, दलित या अन्य वंचित तबके की पोषण और खाद्य सुरक्षा पर केंद्रित रखना होगा। यह फैलोशिप छह माह के लिए होगी। आवेदन करते समय पत्रकार को अपना बायोडाटा, पांच ताजा प्रकाशित खबरें और चुने गए विषय पर लगभग हजार शब्दों में प्रस्ताव देना होगा।

'भारत से लेकर अफ्रीका तक का हाल एक जैसा'

» वेस्ट मैनेजमेंट में विशेषज्ञों ने कहा

» कार्यक्रम का आज होगा समापन

भोपाल (नप्र)। 'वेस्ट मैनेजमेंट में भारत से लेकर अफ्रीका तक का हाल एक जैसा है। वेस्ट मैनेजमेंट को लेकर अभी भी लोगों में जागरूकता का अभाव है।' यह बातें मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद में 'वेस्ट, वेल्थ और हेल्थ' विषय पर चल रहे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन विषय विशेषज्ञों ने कहीं।

सुबह के सत्र में इथोपिया से आए यूएन इकोनामिक कमीशन फॉर अफ्रीका के सीनियर रीजनल एडवाइजर डॉ स्टीफन मैक्स क्रोकोर ने 'वेस्ट मैनेजमेंट इन अफ्रीका' विषय पर अपने व्याख्यान में कहा कि अफ्रीका में वेस्ट मैनेजमेंट की स्थिति बहुत ज्यादा अच्छी नहीं।

इस मामले में वहां भी भारत जैसा ही हाल है। हालांकि वर्तमान शताब्दी में आर्थिक वैश्वीकरण और अंतरराष्ट्रीय कारोबार के विस्तार से वेस्ट मैनेजमेंट का मुद्दा उठा है। यहीं डॉ क्रोकोर ने कहा कि बायोमेडिकल में घाना देश का हाल बुरा है। दोनों देश की सरकारें और निजी क्षेत्र मिलकर इस समस्या का कुछ हद तक समाधान तलाश सकते हैं।

बातें ज्यादा, काम कम

इस अवसर पर आयोजित विभिन्न सत्रों में अलग-अलग राज्यों से आए विषय विशेषज्ञों ने अपने अनुभव भी बताए। आंध्रप्रदेश में म्युनिसिपल एडमिनिस्ट्रेशन के कमिश्नर तथा निदेशक डॉ जनार्दन बी. रेड्डी ने कहा कि अभी तक इस विषय पर अनेक सम्मेलन हो चुके हैं, लेकिन क्रियान्वयन बहुत कम हुआ है।

आज हमारी चिंता का विषय यही है कि वेस्ट प्रबंधन के मामले में सामुदायिक सहभागिता का अभाव है। वहीं सुप्रीम कोर्ट कमेटी फॉर सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट की सदस्य डॉ अलमित्रा पटेल ने बताया कि देश ही नहीं बल्कि दुनिया भर में ऐसा शायद पहली बार हुआ होगा जब वारंगल जैसे शहर में केवल एक सप्ताह के भीतर घर-घर जाकर विभिन्न प्रकार के वेस्ट का संग्रह किया गया। कार्यक्रम में छात्रों ने विशेषज्ञों से सवाल भी पूछे।

इसके चलते ही आज वारंगल देश के साफ सुथरे शहरों में पहली पंक्ति में खड़ा है। इस तीन दिवसीय सम्मेलन का समापन रविवार को होगा।

एल्युमिनी मीट | माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विवि में मिले पुराने छात्र

'रियल एस्टेट में न बदल जाए फोर्थ एस्टेट'

भोपाल (नप्र)। 'मीडिया में प्रतिस्पर्धा की दौड़ हमेशा अनैतिक ही होगी। पिछले कुछ सालों में नेताओं में मीडिया मालिक बनने का शौक बढ़ा है। ये एक बड़ा खतरा है। इसे रोकने का जरिया पत्रकारों के पास नहीं है। जैसी छटनी पत्रकारों की होती है वैसी ही छटनी मालिकों की भी होनी चाहिए। आत्म नियमन के नाम पर मीडिया ने खुद को सुधारा नहीं है। भाषायी पत्रकारिता भारत के लिए बड़ी चुनौती है। हम भाषायी अपाहिज पैदा कर रहे हैं।' वरिष्ठ पत्रकार राहुल देव ने शनिवार को पत्रकारिता के कई पहलुओं पर गंभीर चर्चा की।

मौका था माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विवि में आयोजित एल्युमिनी मीट का। देव समारोह के मुख्य वक्ता थे। उन्होंने कहा, डिजीटल मल्टी के कारण नई पीढ़ी पढ़ने की प्रवृत्ति से दूर हो रही है। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि पत्रकारिता ही एक मात्र ऐसा पेशा है जो झोपड़ी से लेकर 5 स्टार होटल का आनंद दिला सकता है। ऐसे एडवेंचर में आपका स्वागत है।

विश्वविद्यालय परिसर में संबोधन देते वरिष्ठ पत्रकार राहुल देव। फोटो : नवदुनिया

दशा-दिशा जानना जरूरी

विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति अच्युतानंद मिश्र ने इस मौके पर कहा कि ये जानना जरूरी है कि मीडिया की दशा और दिशा क्या है। उन्होंने कहा, मीडिया के संपादकों के विचारों को जानना शिक्षण संस्थानों के दायित्व में शामिल होना चाहिए। कार्यक्रम के प्रथम सत्र के दौरान विवि के प्रथम महानिदेशक प्रो राधेश्याम शर्मा ने कहा, मीडिया फोर्थ स्टेट के रूप में स्थापित है। नई पीढ़ी का प्रयास होना चाहिए कि फोर्थ स्टेट, रियल स्टेट में न बदल जाए।

इस मौके पर वरिष्ठ पत्रकार रामशरण जोशी ने कहा कि आज युवाओं के सामने बाजार के दबाव के बीच बेहतर कार्य को करने की चुनौती है।

ऐसे में पत्रकारिता के मूल्यों का संरक्षण किस प्रकार किया जाए इस बात पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए। वहीं, विधायक विश्वास सारंग ने कहा कि पत्रकारिता लोकतंत्र के अन्य तीन स्तंभों के साथ समाज की दिशा सुनिश्चित करती है।

कार्यक्रम में सांसद और विवि महापरिषद के सदस्य उदयप्रताप सिंह ने व्यावसायिक और सामाजिक जिम्मेदारी निभाने वाले पत्रकारों की समाज में आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम में विवि के कुलपति प्रो बृज किशोर कुठियाला ने अध्यक्षीय उद्बोधन दिया। कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रवादी पत्रकारिता और मीडिया मीमांसा पुस्तक का विमोचन किया गया।

दिल्ली क्यों जाना है?

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में विवि के पूर्व विद्यार्थियों ने अपने विचार रखे। दिल्ली में कार्यरत खुशबू श्रीवास्तव ने कहा कि यदि स्टूडेंट्स दिल्ली आकर काम करना चाहते हैं तो खान-पान समय पर खाएं। बेहतर पत्रकार बनने के लिए सेहत का ख्याल रखा जाना जरूरी है। इस दौरान कई विद्यार्थियों ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि दिल्ली में पत्रकारिता करना कोई कठिन कार्य नहीं है। बल्कि, एक पत्रकार अपनी लेखनी और कार्यशैली से दुनिया में पहचान बना सकता है। वरिष्ठ पत्रकार डॉ नंद किशोर त्रिखा ने कहा कि पत्रकारिता के विद्यार्थी सिर्फ दिल्ली को अपना लक्ष्य न बनाएं। भारत बहुत बड़ा देश है आज पहले से कहीं अधिक अवसर मौजूद हैं।

नईदुनिया

शहर में हुआ इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल, कई फिल्मों का हुआ सिलेक्शन गवाह में मुंबई बम कांड

शहर में हुआ इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल, कई फिल्मों का हुआ सिलेक्शन 'गवाह' में मुंबई बम कांड

नोयडा के मिनी बॉक्स ऑफिस का आयोजनङ"ख११ऋ

Enlarge Image

"सचयी×चार्रबथ.ैहर्कनगीग़ि१७५४७.ीॅजऋ

"सचयी×चार्रबथ.ैहर्कनगीग़ि१७५४८.ीॅजऋ

ि्टा्रतब काम आती है इंसानियत

अमेरिका की आतंकवादी घटना हो या मुंबई का बम कांड, जब त्रासदी से आदमी घिर जाता है तब इससे उबरने में इंसानियत ही आगे आती है। इस बात को मेरे दिल ने छू लिया और मैंने "गवाह" बनाने का निर्णय लिया। यह कहना है फिल्म की डायरेक्टर गौरी चड्ढा (मुंबई) का। फेस्टिवल में शामिल होने आईं गौरी ने बताया कि यह उनकी चौथी फिल्म है। साथ ही वे हॉलीवुड और बॉलीवुड के विभिन्ना प्रोजेक्ट्स में काम कर चुकी हैं। इनमें मिशन इंपासिबल-घोस्ट प्रोटोकॉल (२०११), गांधी ऑफ द मंथ(२०१२) आदि शामिल हैं। आगे वे ह्यूमन ट्रेफिकिंग विषय पर फीचर फिल्म बनाने पर विचार कर रही हैं। इसमें हॉलीवुड के कलाकार और फिल्मकार भी शामिल होंगे।तब काम आती है इंसानियत

अमेरिका की आतंकवादी घटना हो या मुंबई का बम कांड, जब त्रासदी से आदमी घिर जाता है तब इससे उबरने में इंसानियत ही आगे आती है। इस बात को मेरे दिल ने छू लिया और मैंने "गवाह" बनाने का निर्णय लिया। यह कहना है फिल्म की डायरेक्टर गौरी चड्ढा (मुंबई) का। फेस्टिवल में शामिल होने आईं गौरी ने बताया कि यह उनकी चौथी फिल्म है। साथ ही वे हॉलीवुड और बॉलीवुड के विभिन्ना प्रोजेक्ट्स में काम कर चुकी हैं। इनमें मिशन इंपासिबल-घोस्ट प्रोटोकॉल (२०११), गांधी ऑफ द मंथ(२०१२) आदि शामिल हैं। आगे वे ह्यूमन ट्रेफिकिंग विषय पर फीचर फिल्म बनाने पर विचार कर रही हैं। इसमें हॉलीवुड के कलाकार और फिल्मकार भी शामिल होंगे।
ङ"ख८ऋ

-ीचगनैही्रशहर में हुआ इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल, कई फिल्मों का हुआ सिलेक्शन

"गवाह" में मुंबई बम कांड ङ"ख८२ऋ

्िटा्रभोपाल(नप्र)। "आतंकवादी चाहे बम ब्लास्ट करें या फिर एरोप्लेन टकराकर लोगों की जिंदगियां छीन लें। उसका असर सालों तक लोगों के दिलो-दिमाग में रहता है। इन त्रासदियों के गवाह रहे लोगों की जिंदगी बहुत मुश्किल हो जाती है।"

यह थीम थी शॉर्ट फिल्म "गवाह" की। इसका प्रदर्शन शनिवार को होटल आर्कमेनॉर में आयोजित भोपाल इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में किया गया। नोयडा की मिनी बॉक्स ऑफिस संस्था द्वारा आयोजित इस फेस्टिवल में देश-विदेश की शॉर्ट फिल्म और डाक्यूमेंट्रीज दिखाई गईं। मुंबई बम कांड पर आधारित फिल्म गवाह में दिखाया गया कि जब कोई घटना होती है, उसके कुछ दिन तक ही सरकार और मीडिया सक्रिय रहती है और बाद में सब इसे भूल जाते हैं, लेकिन जिन लोगों के साथ या जिनके सामने ये घटनाएं हुई हैं उनके लिए एक-एक पल भारी पड़ता है। उनकी पीड़ा को इस फिल्म के जरिए सामने लाया गया। गौरी चड्ढा द्वारा निर्देशित इस फिल्म का निर्माण चेसिंग फ्रेम्स प्रोडक्शन्स के बैनर तले किया गया था। फिल्म की अवधि २१ मिनट ५२ सेकंड की है। सिनेमेटोग्रॉफी दुलीप रेगमी और सुदीप सेनगुप्ता की थी।

इन मूवीज का रहा जलवा

दिन भर चले इस फेस्टिवल में आईआईटी मुंबई के सोहम चक्रवर्ती द्वारा निर्देशित "पें डोरोस बॉक्स", इंदौर के चौइथराम इंटरनेशनल स्कूल के रक्षित यादव द्वारा निर्देशित खोया बचपन (२१मिनट), भोपाल के फ्रेमबॉक्स एनीमेशन एंड विजुअल इफेक्ट्स द्वारा पुनीत जैन के निर्र्देशन में तैयार "डोनेट ब्लड"(५मिनट), एक्सट्रा कलेक्टिव भोपाल की चंदा के जूते (२२मिनट), मुंबई के मिक्की नरूला और सुनील गुप्ता द्वारा निर्देशित कुंवर साहिब की महिमा सहित पुणे, नोयडा, गुड़गांव, हैदराबाद, चेन्नाई और स्पेन व ईरान के फिल्मकारों की डाक्यूमेंट्रीज भी दिखाई गईं।

देश भर के फिल्मकारों ने इसमें शिरकत की। फेस्टिवल डायरेक्टर रामबाबू सिंह के अनुसार इसके पहले यह आयोजन मुंबई, दिल्ली, कोलकाता, नोयडा व बैंगलुरू में हो चुका है। फेस्टिवल के समापन के मौके पर उत्कृष्ट फिल्मों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माखनलाल चतुर्वेदी विश्वविद्यालय के कुलपति बीके कुठियाला थे। विशेष अतिथि फिल्म प्रोड्यूसर और ज्ञान गंगा ग्रुप के डायरेक्टर मिनीराज मोदी थे।

Enlarge Image